वाले; **क्रियाविशेष**=आडम्बर पूर्ण क्रियायें; **बहुलाम्**=विविध; **भोग**=इन्द्रियतृप्ति; **ऐश्वर्य**=ऐश्वर्य; **गतिम्**=प्रगति; **प्रति**=उन्मुखी।

अनुवाद

अल्पबुद्धि मनुष्य वेद के उन आलंकारिक वचनों में बहुत आसक्त रहते हैं, जिनमें स्वर्ग, उच्चकुल, ऐश्वर्य और भोगों को देने वाले नाना प्रकार के सकामकर्मों का विधान है। भोग और ऐश्वर्य की अभिलाषा के कारण ही वे ऐसा कहते हैं कि इससे श्रेष्ठ और कुछ नहीं है।।४२-४३।।

तात्पर्य

साधारणतः लोग अधिक बुद्धिमान् नहीं हैं और इसलिए अज्ञानवश वेदों के कर्मकाण्ड में प्रशंसित सकाम कर्मों में अति आसक्त हो रहे हैं। मदिरा, कामिनी तथा प्राकृत ऐश्वर्य से पूर्ण स्वर्गीय जीवन के उपभोग से अधिक अन्य कुछ भी उन्हें अभीप्सित नहीं। वेदों में स्वर्गारोहण करने के लिए 'ज्योतिष्टोम' आदि यज्ञों का विधान किया गया है। वास्तव में कहने का तात्पर्य यह है कि जो स्वर्गगमन का अभिलाषी हो, वह इन यज्ञों को करे; परन्तु अल्पज्ञ मनुष्य समझ बैठते हैं कि वैदिक ज्ञान का परम लक्ष्य बस इतना ही है। ऐसे साधनहीन लोगों के लिए दृढ़तापूर्वक कृष्णभावनाभावित कर्म करना बड़ा कठिन है। जिस प्रकार कोई मूर्ख परिणाम को न जानते हुए विषमय वृक्षों के कुसुमों में आसक्त हो जाय, उसी भाँति केवल अज्ञानी ही स्वर्गीय ऐश्वर्य एवं उससे उपलब्ध होने वाले विषयभोग के प्रति आकृष्ट होते हैं।

वैदिक कर्मकाण्ड में उल्लेख है कि जो चातुर्मासिक तप आदि करते हैं, वे अमृतत्त्व एवं नित्य आनन्द की प्राप्ति के लिए सोमरस नामक पेय द्रव्य पीने के अधिकारी हो जाते हैं। इस पृथ्वी पर भी बहुत से व्यक्ति बलिष्ठता और इन्द्रियतृप्ति की सामर्थ्य के लिए सोमरस का पान करने को बड़े आतुर हैं। भवबन्धन से मुक्ति के साधन में श्रद्धाहीन होने के कारण इस कोटि के मनुष्य वैदिक यज्ञों के आडम्बरमय अनुष्ठानों में विशेष आसक्त हैं। प्रायः विषयी होने से उन्हें स्वर्गीय सुख से अधिक और कुछ नहीं चाहिए। ज्ञात होता है कि स्वर्ग में नन्दन-कानन नामक अनेक वन हैं, जहाँ सुन्दर देवांगनाओं का संग तथा प्रचुरमात्रा में सोमरस-मदिरा नित्य उपलब्ध है। इस प्रकार का शारीरिक सुख निस्सन्देह इन्द्रियविषयजन्य है। अतएव ये मनुष्य अपने को इस प्राकृत-जगत् का अधीश्वर (प्रभु) समझते हुए अनित्य प्राकृत सुख को भोगने में ही पूर्ण रूप से अनुरक्त हैं।

14.2

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां　　तयापहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते।।४४।।

भोग=विषय भोग; **ऐश्वर्य**=ऐश्वर्य में; **प्रसक्तानाम्**=जो आसक्त हैं; **तया**=उन से, **अपहृतचेतसाम्**=जिसका चित्त मोहित है (उनके); **व्यवसायात्मिका**=